माँ सरस्वती चालीसा

॥ दोहा ॥

जनक जननि पद कमल रज,
निज मस्तक पर धारि।
बन्दौं मातु सरस्वती,
बुद्धि बल दे दातारि॥

पूर्ण जगत में व्याप्त तव,
महिमा अमित अनंतु।
रामसागर के पाप को,
मातु तुही अब हन्तु॥

॥ चौपाई ॥

जय श्री सकल बुद्धि बलरासी,
जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी।

जय जय जय वीणाकर धारी,
करती सदा सुहंस सवारी।

रूप चतुर्भुजधारी माता,
सकल विश्व अन्दर विख्याता।

जग में पाप बुद्धि जब होती,
जबहि धर्म की फीकी ज्योती।

तबहि मातु ले निज अवतारा,
पाप हीन करती महि तारा।

बाल्मीकि जी थे हत्यारे,
तव प्रसाद जानै संसारा।

रामायण जो रचे बनाई,
आदि कवि की पदवी पाई।

कालिदास जो भये विख्याता,
तेरी कृपा दृष्टि से माता।

तुलसी सूर आदि विद्धाना,
भये और जो ज्ञानी नाना।

तिन्हहिं न और रहेउ अवलम्बा,
केवल कृपा आपकी अम्बा।

करहु कृपा सोइ मातु भवानी,
दुखित दीन निज दासहि जानी।

पुत्र करै अपराध बहूता,
तेहि न धरइ चित सुन्दर माता।

राखु लाज जननी अब मेरी,
विनय करूं बहु भाँति घनेरी।

मैं अनाथ तेरी अवलम्बा,
कृपा करऊ जय जय जगदम्बा।

मधु कैटभ जो अति बलवाना,
बाहुयुद्ध विष्णू से ठाना।

समर हजार पांच में घोरा,
फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा।

मातु सहाय कीन्ह तेहि काला,
बुद्धि विपरीत करी खलहाला।

तेहि ते मृत्यु भई खल केरी,
पुरवहु मातु मनोरथ मेरी।

चंड मुण्ड जो थे विख्याता,
छण महु संहारेउ तेहिमाता।

रक्तबीज से समरथ पापी,
सुरमुनि हृदय धरा सब काँपी।

काटेउ सिर जिम कदली खम्बा,
बार बार बिनऊँ जगदम्बा।

जगप्रसिद्ध जो शुंभ निशुंभा,
छण में वधे ताहि तू अम्बा।

भरत-मातु बुद्धि फेरेऊ जाई,
रामचन्द्र बनवास कराई।

एहिविधि रावन वध तू कीन्हा,
सुर नर मुनि सबको सुख दीन्हा।

को समरथ तव यश गुन गाना,
निगम अनादि अनंत बखाना।

विष्णु रूद्र अज सकहिन मारी,
जिनकी हो तुम रक्षाकारी।

रक्त दन्तिका और शताक्षी,
नाम अपार है दानव भक्षी।

दुर्गम काज धरा पर कीन्हा,
दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा।

दुर्ग आदि हरनी तू माता,
कृपा करहु जब जब सुखदाता।

नृप कोपित जो मारन चाहै,
कानन में घेरे मृग नाहै।

सागर मध्य पोत के भंजे,
अति तूफान नहिं कोऊ संगे।

भूत प्रेत बाधा या दुःख में,
हो दरिद्र अथवा संकट में।

नाम जपे मंगल सब होई,
संशय इसमें करइ न कोई।

पुत्रहीन जो आतुर भाई,
सबै छांड़ि पूजें एहि माई।

करै पाठ नित यह चालीसा,
होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा।

धूपादिक नैवेद्य चढ़ावै,
संकट रहित अवश्य हो जावै।

भक्ति मातु की करैं हमेशा,
निकट न आवै ताहि कलेशा।

बंदी पाठ करें शत बारा,
बंदी पाश दूर हो सारा।

राम सागर बाधि सेतु भवानी,
कीजै कृपा दास निज जानी।

॥ दोहा ॥

माता सूर्य कान्ति तव,
अंधकार मम रूप।
डूबन से रक्षा करहु,
परूँ न मैं भव कूप॥

बल बुद्धि विद्या देहु मोहि,
सुनहु सरस्वति मातु।
राम सागर अधम को,
आश्रय तू ही ददातु॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल